بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-26.04.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हमरुल असद नामक युद्ध के हवाले से आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन परिचय और सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमअीन के इश्क़ एवं वफ़ा तथा बलिदानों का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 26,अप्रैल 2024. स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हमरुल असद मं युद्ध होने का कारण, उसकी पृष्ठ भूमि पिछले ख़ुत्बः में बयान हुई थी। जब ओहद के युद्ध के बाद दुशमन का रास्ते से पलट कर मदीने पर हमला करने के षड्यन्त्र का पता चला तो उस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ी. तथा हज़रत उमर रज़ी. को बुलाया तथा उन दोनों ने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह ! सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, दुश्मन की ओर चलें ताकि वह हमारे बच्चों पर हमला न कर दे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुबह की नमाज़ के बाद लोगों को बुलवाया और हज़रत बिलाल रज़ी. से ऐलान करवाया कि दुशमन के लिए निकलो तथा हमारे साथ वही निकले जो पहल ओहद की लड़ाई में शामिल था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना झंडा मंगवाया तथा यह हज़रत अली रज़ी. को दे दिया। एक स्थान पर यह भी बयान हुआ है कि हज़रत अबू बकर रज़ी. को वह झंडा दिया था। इस अवसर पर आप स. ने हज़रत इब्ने उम्मे मकतूम रज़ी. को मदीना में अपना नायब नियुक्त किया था।

जीवन परिचय लेखक वर्णन करते हैं कि हज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शत्रु के पीछे उसका पीछा करते हुए निकलने का निर्णय एक अत्यंत बुद्धिसंगत योजना थी। इसके विस्तार में बयान हुआ है कि मुनाफ़िकों की दृष्टि के अनुसार अधिक मानव शक्ति के बिना पीछा करते हुए जाना, अत्यंत भयावह योजना थी किन्तु बाद के हालात ने साबित कर दिया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़ैसला अत्यंत बुद्धिमानी

थी जिससे मुसलमानों को अत्यधिक लाभ प्राप्त हुए। इस फ़ैसले ने मुजाहिदों के उत्साह को और अधिक उच्च स्तर तक पहुंचा दिया और पाखंडियों के दिल पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निर्णय शक्ति एवं विश्वास की शक्ति का भय बिठा दिया। तीसरी ओर जब दुशमन को सूचना मिली कि इस्लामी सेना उनका पीछा कर रही है तो उनके साहसों के टिमटिमाते हुए दिये बुझने लगे। इस अवसर पर रईसुल मुनाफ़िक़ीन (पाखंडियों के मुख्या) अब्दुल्लाह बिन अबी ने भी साथ जाने की अनुमति मांगी थी जिस पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे मना फ़रमा दिया था।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की घोषणा क बाद ज़ख़्मी सहाबा रज़ी. के इश्क़ एवं आज्ञा पालन का यह हाल था कि वे अपने घावों को संभालते हुए अपने हथ्यिारों को लिए हुए एक बार फिर तुरन्त निकल पड़े। हज़रत उसद बिन ज़हीर रज़ी. को 9 घाव लगे थे, उन्होंने अभी दवा लगाने का इरादा ही किया था कि कानों में आवाज़ पड़ते ही घावों पर दवाई लगाने के लिए भी नहीं रुके, तथा चल पड़े। बनू सलमा क़बीले से चालीस ज़ख़मी निकले। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें ऐसी हालत में भी आदेशों को पालन करते हुए देख कर उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ फ़रमाई। तुफ़ैल बिन नुअमान रज़ी. को तेरह, ख़राश बिन अस्समतः रज़ो. को दस, कअब बिन मालिक रज़ी. को दस से अधिक तथा क़ुतबा बिन आमिर रज़ो. को नौ घाव लगे थे परन्तु इसके बावजूद मुसलमान अपने हथियारों की ओर दौड़े और अपने घावों पर मर्हम लगाने के लिए नहीं ठहरे। ख़ुदा तआला ने सहाबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इसी भावना को अपने कलाम में लिख दिया ताकि रहती दुनिया तक के लिए उन पर श्रद्धा सुमन निछावर होते रहें। ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि वे लोग जिन्होंने अल्लाह और रसूल को लब्बैक (उपस्थित हूँ) कहा, बाद इसके कि उन्हें घाव लग चुके थे, उनमें से उन लोगों के लिए जिन्होंने एहसान किया तथा तक़वा धारण किया, महान बदला है। हज़रत आयशा रज़ी. फ़रमाया करती थीं कि इसके एक प्रमाण हज़रत अबू बकर रज़ी. तथा हज़रत ज़ुबैर रज़ी. भी हैं।

एक अभियान में एक भाग्य शाली निष्ठावान सहाबी हज़रत जाबिर रज़ी. ऐसे थे जो ओहद की लड़ाई में अपने बाप के आज्ञा पालन में अपनी 9 बहनों के पास रुकने के कारण शामिल न हो सके थे जिसको विस्तार के साथ उन्होंने आप स. को बयान किया तो आप स. ने उनकी इश्क़ व मुहम्मत में डूबी हुई दास्तान सुन कर उन्हें अनुमति दी थी।

इस अभियान में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस हालत में रवाना हुए कि आप स. का पवित्र मुख घाव युक्त था, पवित्र माथे पर घाव था, पवित्र दांत टूटा हुआ था, दोनों होंठ भीतर से घाव ग्रस्त थे, दांया कन्धा तथा दोनों घुटने भी ज़ख़मी थे। हज़रत तलहा रज़ी. जिन के शरीर पर सत्तर से अधिक घाव थे, बयान करते हैं कि मैं अपने ज़ख़मों की तुलना में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ख़मों के लिए चिन्तित था। एक रिवायत के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ी. से फ़रमाया कि भविष्य में कभी क़ुरैश हमारे साथ ऐसा व्यवहार नहीं कर पाएँगे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला मक्का को हमारे हाथों से विजय करा देगा, अथवा एक रिवायत के अनुसार यह फ़रमाया कि हम हिज्र असवद (काला पत्थर, जो ख़ाना ए कअबा के एक कोने में लगा है) को चूमेंगे।

इस युद्ध में दो अन्सार भाईयों हज़रत अब्दुल्लाह बिन सहल रज़ी. और हज़रत राफ़े बिन सहल रज़ी. के आज्ञा पालन का उदाहरण भी नज़र आता है जिन्होंने ज़ख़मी अवस्था में पैदल यात्रा की। इसके विवरण में आता है कि जब दोनों ओहद के युद्ध से वापस आए तो वे अत्यधिक ज़ख़मी थे। जब इन दोनों भाईयों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हमरुल असद नामक युद्ध में सम्मिलित होने के विषय में आदेश सुना तो उनमं से एक ने दूसरे से कहा- बख़ुदा, यदि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ युद्ध में शामिल न हो सके तो यह अत्यंत दुःख की बात होगी। फिर कहने लगे- बख़ुदा, हमारे पास कोई सवारी नहीं है जिस पर हम सवार हों, तथा न ही हम जानते हैं कि किस तरह यह काम करें। हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा कि आओ मेरे साथ हम पैदल चलते हैं। हज़रत राफ़े रज़ी. ने कहा कि अल्लाह की क़सम मुझे तो ज़ख़मों के कारण चलने का भी सामर्थ्य नहीं है। आपके भाई ने कहा कि आओ हम धीरे धीरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर चलते हैं। अतएव वे दोनों गिरते पड़ते चलने लगे। उनकी ऐसी दशा थी कि दोनों ही ज़ख़मी थे, परन्तु जो कम ज़ख़मी थे वे अधिक ज़ख़मी को अपनी पीठ पर उठा लेते थे, किन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर चलते रहे। दुर्बलता के कारण कई बार ऐसी दशा हो जाती थी कि वे हरकत भी नहीं कर सकते थे, यहाँ तक वे दोनों इशा के समय तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हो गए। सहाबा किराम ने उस समय डेरा लगा लिया था तथा आग जला रहे थे। आप दोनों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश किया गया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन दोनों से पूछा कि किस चीज़ ने तुम्हें रोके रखा था। उन दोनों ने इसका कारण तथा विवरण बता दिया। आप स. ने दोनों को भलाई की दुआएँ देते हुए फ़रमाया कि यदि तुम दोनों को लम्बी आयु मिली तो तम देखोगे कि तुम लोगों को घोड़े, ख़च्चर तथा ऊँट सवारियों के रूप में प्राप्त होंगे, परन्तु वे तुम दोनों की इस यात्रा से अच्छी नहीं होंगे जो यात्रा इस समय तुमने पैदल गिरते पड़ते किया है, अर्थात तुम्हारी यात्रा का पुण्य उस ज़माने की सर्वोत्तम अनुकम्पाओं से भी अधिक है। यह भी कहा जाता है कि यह घटना हज़रत अनस रज़ी. और हज़रत मूनिस फ़ज़ाला के बेटों के साथ पेश आई थी, सम्भव है कि यह घटना दोनों के साथ ही सम्बंधित हो।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ी. बयान करते हैं कि इस युद्ध में हमारी सामान्य जीविका खजूरें थीं। हज़रत सअद बिन अबादा रज़ी. तीस ऊँट तथा खजूरें लाए जो हमरुल असद नामक स्थान तक हमारे लिए पर्याप्त रहीं। कभी कभी ऊँट का मांस भी खाया जाता था। रात के समय अधिक संख्या में आग के अलाव रौशन किए जाते ताकि सेना की अधिक संख्या प्रदर्शित हो तथा दुशमन भयभीत हो।

इसके बीच में मअबद बिन अबू मअबद ख़ज़ाई का भी वर्णन आता है कि उसने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भेंट की तथा क़ुरैश को भी इस्लाम की सेना से डराया। यह अभी तक मुशरिक था, इसने अबू सुफ़यान के सामने इस्लाम की सेना का बढ़ा चढ़ा कर इस प्रकार चित्रण किया कि अबू सुफ़यान तथा उसके साथियों के साहस चूर चूर हो गए तथा उन पर घबराहट एवं रौब तारी हो गया और अबू सुफ़यान को इसमें भी ही भलाई नज़र आई कि वह जितनी जल्दी सम्भव हो सके अपनी सेना को लेकर मक्का पहुंच जाए। अबू सुफ़यान की रवानगी की सूचना के बाद आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन दिन वहाँ विश्राम

किया और फिर आप स. मदीना वापस तशरीफ़ ले गए। एक रिवायत में है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पाँच दिन मदीना से बाहर रहे।

हज़रत अबू उबैदा रज़ी. कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने की ओर आने से पहले मुआवियः बिन मुग़ीरह को गिरफ़तार कर रखा था। यह छुप कर मदीने में रह रहा था तथा मदीने के हालात की सूचनाएँ विरोधियों को दिया करता था। जब यह गिरफ़तार हुआ तो उसने हज़रत उसमान रज़ी. से शरण मांगी। आप रज़ी. के निवेदन पर आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको शरण देते हुए फ़रमाया कि यह तीन दिनों के अन्दर यहाँ से चला जाए, यदि तीन दिन बाद भी देखा गया तो मार दिया जाएगा। परन्तु यह तीन दिन बाद भी वहीं छिपा रहा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ी. और हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ी. को फ़रमाया कि तुम उसको अमुक स्थान पर छिपा हुआ पाओगे। अतएव उन दोनों ने उसे वहीं पाया तथा उसकी हत्या कर दी।

हमरुल असद के स्थान पर आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुशरिकों के कवि अबू अज़्ज़ा को भी गिरफ़तार किया था, इससे पहले यह बदर की लड़ाई के समय मुसलमानों के हाथों गिरफ़तार हुआ था तथा अपनी निर्धनता एवं बटियों के लिए आप स. से दया की प्रार्थना की थी और आप स. ने उसको बिना फ़िदया (स्वतंत्र होने के बदले में धन राशि) लिए उपकार करते हुए छोड़ दिया था और उससे यह वादा लिया था कि भविष्य में वह न तो आप स. के विरुद्ध युद्ध में आएगा, न आप स. के विरुद्ध सेना एकत्र करेगा तथा न आप स. के विरुद्ध किसी को उकसाएगा। किन्तु उसने अपना वादा तोड़ दिया और आहद की लड़ाई में क़ुरैश के साथ वापस आया तथा अपनी कविताओं के माध्यम से उनको भड़काता था। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाई कि यह व्यक्ति इस बार बच कर न जाने पाए। अतः यह फिर गिरफ़तार हुआ, इसने फिर आप स. स रिहाई के वास्ते दिए, किन्त, आप स. ने आदेश दिया कि इसकी गर्दन मार दो। फिर आप स. ने फ़रमाया- मोमिन एक छेद से दो बार नहीं डसा जा सकता, शेष इन्शाअल्लाह आगे बयान होगा।

तत्पश्चात हुज़ूरे अनवर ने अन्त में फ़राज़ अहमद ताहिर साहब शहीद ऑफ़ रबवा, जिन्हें आस्ट्रेलिया के एक शॉपिंग सैन्टर में एक आस्ट्रेलियन व्यक्ति ने चाक़ू से वार करके शहीद कर दिया था, का सद्वर्णन फ़रमाया तथा उनके सद्गुण बयान फ़रमाए और दुआ की, कि अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात बुलन्द फ़रमाए, समस्त परिजनों को साहस प्रदान करे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131